मुस्लिम विद्यार्थियों के परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी अपव्यय की समस्या एक साहित्यिक सर्वेक्षण

अमर सिंह*
अजित कुमार राय**

किसी भी राष्ट्र के विकास का स्तर उस देश की शिक्षा नीतियों एवं शिक्षा के स्तर से ही परिभाषित होता है। इस तथ्य को स्वीकार करते हुए देश में स्वतंत्रता पश्चात् कई महत्वाकांक्षी नीतियों एवं कार्यक्रमों को लागू किया गया है। जिसका उद्देश्य विद्यालयों में नामांकन दर की वृद्धि एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से देश में संपूर्ण साक्षरता प्राप्त करना है। परंतु कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं एवं संवैधानिक प्रावधानों के उपरांत भी विद्यालयों से विद्यार्थियों के अपव्ययित (Drop Out) होने की प्रक्रिया बनी हुई है। विशेषकर मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों में यह समस्या अति गंभीर है। मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों की शिक्षा के संदर्भ में संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है एवं सर्वेक्षण के द्वारा मुस्लिम समुदाय में विद्यालयी अपव्यय (Drop Out) की स्थिति का अवलोकन एवं इसके कारणों को जानने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र विभिन्न शोध सर्वेक्षणों से प्राप्त परिणामों के आधार पर संकलित परिणाम को प्रस्तुत करता है।

प्रस्तावना

वर्तमान में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रसार एक वैश्विक प्रघटना के रूप में उभर कर स्थापित हुआ है। वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा एक आवश्यकता के साथ-साथ हर व्यक्ति का अधिकार भी है (शिक्षा का अधिकार, 2009)। आज गुणवत्तापूर्ण एवं निःशुल्क शिक्षा का प्रचार-प्रसार वैश्विक मंच पर हर देश की प्रतिबद्धता है। शिक्षा के प्रसार हेतु देशव्यापी प्रयासों के केंद्र बिंदु में तीन प्रमुख लक्ष्यों को चिह्नित किया जा सकता है। ये तीन प्रमुख लक्ष्य हैं — देश के हर बालक-बालिका को विद्यालय से जोड़ना अर्थात् नामांकन दर में वृद्धि करना, विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों के ठहराव को सुनिश्चित करना अर्थात् ड्रॉप आउट की दर को कमतर रखना एवं विद्यालय में प्राप्त होने वाले शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना।

देशव्यापी विद्यालयी शिक्षा नीतियों एवं प्रयासों (सर्व शिक्षा अभियान, मध्याह्न भोजन योजना, शिक्षा का अधिकार, 2009) के माध्यम से विद्यालयी स्तर पर

* *शोधार्थी*, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221 005
** *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221 005

शिक्षण संस्थानों में नामांकन दर की वृद्धि सराहनीय है। प्राथमिक स्तर पर कुल नामांकन दर 2005–06 में 84.5 प्रतिशत से बढ़कर 2013–14 में 88.08 प्रतिशत, उच्च प्राथमिक स्तर पर इसी अवधि में 43.1 से बढ़कर 70.2 प्रतिशत और प्रारंभिक स्तर पर 2013–14 में नामांकन 88.31 प्रतिशत रही (एजुकेशन फ़ॉर ऑल—ई.एफ.ए., 2013)। सन् 2009 से कुल नामांकन दर लगातार 96 प्रतिशत से अधिक रही है, जो इन प्रयासों की सफलता को स्थापित करती है (साहनी, 2015)।

विद्यालयी अपव्यय दरों में भी सुधार परिलक्षित होता है। प्राप्त आँकड़ों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि प्राथमिक स्तर पर विद्यालयी अपव्यय की दर 2000–01 से 2008–09 के मध्य 15.8 प्रतिशत बिंदु घटी है एवं प्रारंभिक स्तर के लिए यह कमी 11.4 प्रतिशत बिंदु तक देखने को मिली है (ई.एफ.ए., 2014)। अपव्यय दर के प्रत्यक्ष सुधार के बाद भी शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों में विद्यालयी अपव्यय एक चिंता का विषय है (ई.एफ.ए., 2014)। यदि समुदाय विशेष के संदर्भ में अपव्यय की प्रघटना का विश्लेषण किया जाए तो यह समस्या और भी गंभीर है। यद्यपि अल्पसंख्यक समुदायों में सबसे बड़ा समुदाय मुस्लिम समुदाय है, जो देश की कुल आबादी का लगभग 15वाँ हिस्सा है, परंतु शैक्षिक दृष्टिकोण से यह समुदाय अभी भी पिछड़ेपन का शिकार है (शाजिल, 2015)। जनगणना, 2011 के अनुसार जहाँ देश की औसत निरक्षरता दर 36.9 है, वहीं मुस्लिम समुदाय में यह स्तर 42.7 है। मुस्लिम समुदाय में विद्यालयी अपव्यय की दर भी अन्य समुदायों की तुलना में अधिक पाई गई है (सर्वे ऑफ़ एस्टीमेशन ऑफ़ आउट ऑफ़ स्कूल चिल्ड्रेन, 2014 एवं एस.आर.आई., 2014)। अतः इस समुदाय के संदर्भ में अपव्यय की घटना का विश्लेषण शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। इन्हीं तथ्यों के आलोक में शोधकर्ता ने मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों में विद्यालयी अपव्यय की प्रघटना को साहित्य सर्वेक्षण के द्वारा समझने का प्रयास किया है।

उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे —

1. विद्यालयी अपव्यय क्या है?
2. नामांकन के संदर्भ में मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों की प्रस्थिति क्या है?
3. विद्यालयी अपव्यय के संदर्भ में मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों की प्रस्थिति क्या है?
4. मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों के संदर्भ में विद्यालयी अपव्यय के मुख्य कारण क्या हैं?

सर्वेक्षण विधि

इस शोध अध्ययन के लिए दस्तावेज़ों का विश्लेषण, विषय-वस्तु विश्लेषण विधि द्वारा किया गया। सर्वेक्षण हेतु उन शोध पत्रों, लेखों एवं सर्वे रिपोर्टों को चयनित किया गया, जिनका प्रकाशन सन् 2001 से 2016 के मध्य हुआ एवं जिनका प्रकाशन ऑनलाइन उपलब्ध है। ऑनलाइन खोज हेतु एरिक (ERIC), शोध गंगा, एकेडमियाँ एडू एवं रिसर्च गेट जैसे ऑनलाइन सर्वर की सहायता ली। इन सर्वर पर खोज के लिए उपयुक्त शब्दों एवं वाक्यांशों, जैसे कि, मुस्लिम विद्यार्थियों में विद्यालयी अपव्यय, विद्यालयी अपव्यय के प्रमुख

कारण, विद्यालयी अपव्यय संबंधित शोध इत्यादि जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया।

इस सर्वेक्षण विधि के न्यादर्श के रूप में चयनित कुल 14 शोध अध्ययनों का चयन किया गया। चयनित शोध अध्ययनों में बसंत, 2012; सिंह, 2011; जमाल और रहीम, 2012; गौड़ा और शेखर, 2014; हक, 2016, सिद्दीकी, 2011 व 2013) तथा (हुसैन, 2005; आलम, 2011; रॉय, 2011; फ़ैथ, 2009; आरिफ, 2011; फारूख, 2012; अफसर, 2014 शमिल थे।

इस शोध अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर प्राप्त दस्तावेज़ों का विश्लेषण किया गया। सुविधा एवं संगठित विश्लेषण हेतु प्रत्येक लेख का विश्लेषण निम्न बिंदुओं के आधार पर किया गया— शोधकर्ता/लेखक का नाम एवं वर्ष, लेख का प्रकार (शोध अध्ययन, सैद्धांतिक शोध अध्ययन, रिव्यू शोध अध्ययन), न्यादर्श विधि, उपकरण, प्राप्त परिणाम, सुझाव, न्यादर्श संख्या जिस पर शोध आश्रित है। उपर्युक्त बिंदुओं पर किए गए विश्लेषण को सर्वप्रथम सारणीबद्ध किया गया एवं तदोपरांत सर्वेक्षण के उद्देश्यों के अनुसार सारणीबद्ध आँकड़ों का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया।

परिणाम

शोध अध्ययनों के विषय-वस्तु विश्लेषण द्वारा उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए गए। सुविधा हेतु परिणामों को बिंदुवार ढंग से प्रस्तुत किया गया।

विद्यालयी अपव्यय का परिभाषीकरण

विद्यालयी अपव्यय एक प्रघटना है, जिसके अंतर्गत विद्यार्थी किसी कारणवश अनिवार्य शिक्षा पूर्ण करने से पहले ही विद्यालय छोड़ देते हैं (गुड, 1973)। दूसरे शब्दों में, अपव्यय उस प्रघटना को कहते हैं, जिसके तहत कई विद्यार्थी विद्यालय से अपनी संस्थागत सदस्यता को वापस ले लेते हैं। अग्निहोत्री (2010) के अनुसार यदि विद्यार्थी दो माह या उससे अधिक समय तक विद्यालय से अनुपस्थित रहता है तो उसे अपव्ययित मान लिया जाता है। परंतु किसी विद्यार्थी को अपव्ययित तभी कहा जा सकता है, जब विद्यालय छोड़ने अथवा सदस्यता समाप्त करने अथवा अनुपस्थित रहने का कारण, मृत्यु या किसी अन्य विद्यालय में स्थानांतरण होने से है। (बेगम, 2015; बोन्नेयाउ, 2015)।

किसी विद्यार्थी को विद्यालयी अपव्यय दो अर्थों में समझा जा सकता है। यदि विद्यार्थी उस स्तर के शिक्षण पायदान पर, जिसके हेतु उसका नामांकन हुआ है, पहुँचने से पहले ही विद्यालयी व्यवस्था से अपनी सदस्यता समाप्त कर लेता है, उसे विद्यालयी अपव्यय कहा जाता है। दूसरे अर्थ में, उन विद्यार्थियों को विद्यालयी अपव्यय कहा जाता है, जो शिक्षा चक्र के किसी एक पायदान पर पहुँचने के उपरांत अगले पायदान पर नामांकित नहीं होता है। उदाहरणस्वरूप यदि विद्यार्थी का नामांकन प्राथमिक स्तर पर होता है और विद्यार्थी पाँचवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पहले ही विद्यालय छोड़ देता है तो वह विद्यालयी अपव्यय के प्रथम अर्थ में अपव्ययित विद्यार्थी है। यदि यह विद्यार्थी प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा को पूर्ण करने के उपरांत उच्च प्राथमिक स्तर पर नामांकित नहीं होता है तो उसे दूसरे अर्थ में अपव्ययित विद्यार्थी कहा जा सकता

है। इस शोध अध्ययन में विद्यालयी अपव्यय को उसके पहले अर्थ में प्रयोग किया गया है।

विद्यालयी अपव्यय दर को प्रतिशत में प्रदर्शित किया जाता है एवं किसी निश्चित आयु वर्ग में कुल आबादी के उन बालक और बालिकाओं की संख्या को प्रतिशत में प्रस्तुत करता है, जो किन्हीं कारणवश विद्यालय से बाहर हैं (बोन्नेयाउ, 2015)

नामांकन के संदर्भ में मुस्लिम समुदाय में शिक्षा की प्रस्थिति

नामांकन शिक्षा के प्रसार का एक महत्वपूर्ण मानदंड है। नामांकन दर से यह ज्ञात होता है कि विभिन्न प्रयासों के फलस्वरूप विशेष आयु वर्ग में कुल जनसंख्या का कितना भाग शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया में शामिल हुआ है।

देशव्यापी नामांकन दर के साथ-साथ समुदाय विशेष के नामांकन दर में भी किए जा रहे प्रयासों के फलस्वरूप वृद्धि दर्ज हुई है। वर्ष 2013–14 में प्रारंभिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों का नामांकन कुल नामांकन का 13.73 प्रतिशत रहा है। प्राथमिक स्तर पर 2007–08 में मुस्लिम समुदाय का नामांकन कुल नामांकन का 8.54 था, जो बढ़कर 2008–09 में 9.13 और 2009–10 में 11.47 हो गया (ई.एफ.ए., 2014)।

ग्राफ़ 1 में मुस्लिम समुदाय के 6–14 वर्ष की आयु वर्ग (प्रारंभिक स्तर) में वर्षवार नामांकन कुल नामांकन के प्रतिशत के रूप में प्रदर्शित किया गया है।

डायस (डी.आई.एस.ई.) फ़्लैश स्टैट द्वारा विभिन्न वर्षों के लिए दिए गए नामांकन दर से स्पष्ट है कि मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों के नामांकन दर में निरंतर बढ़ोतरी हुई है। प्रारंभिक स्तर पर इस समुदाय के लिए नामांकन दर 2006–07 में 8.89 प्रतिशत से बढ़कर 2013–14 में 13.73 प्रतिशत हो गई है। नामांकन के

ग्राफ़ 1 — प्रारंभिक स्तर पर मुस्लिम विद्यार्थियों के वर्षवार नामांकन का प्रतिशत

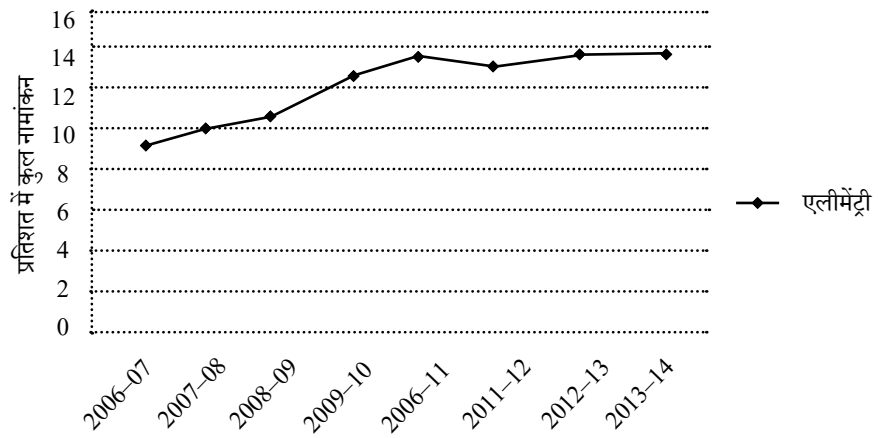

स्रोत — डी.आई.एस.ई. (डायस) फ़्लैश स्टैट, 2006–07 से 2013–2014

संदर्भ में यद्यपि राष्ट्रव्यापी प्रयास अपने उद्देश्य को शत-प्रतिशत प्राप्त नहीं कर पाया है, परंतु शिक्षा के प्रसार में विभिन्न नीतियों एवं कार्यक्रमों की उपलब्धियाँ सराहनीय हैं। नामांकन के संदर्भ में मुस्लिम समुदाय में दर्ज की गई वृद्धि निश्चित तौर पर संतोषजनक है।

विद्यालयी अपव्यय से संबंधित मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों की प्रस्थिति

सत्र 2009–10 में प्राथमिक स्तर पर नामांकित 9.1 प्रतिशत विद्यार्थी अपव्ययित हुए हैं एवं कक्षा 1 और कक्षा 5 के लिए वार्षिक विद्यालयी अपव्यय दर 10.2 और 15.9 प्रतिशत रही है। सत्र 2012–13 में वार्षिक अपव्यय दर घटकर 4.7 हो गई, परंतु अभी भी यह एक बड़ी चुनौती है (ई.एफ.ए., 2014)। विद्यालयी अपव्यय की समस्या एक वैश्विक समस्या है और भारतवर्ष के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह एक गंभीर समस्या है, जो मुस्लिम समुदाय में विशेषकर एक गंभीर चिंतन का विषय है। सच्चर समिति, 2006 ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट किया है कि 6–14 आयु वर्ग के 25 प्रतिशत मुस्लिम बच्चे या तो स्कूल ही नहीं गए या उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। स्पष्टतः यह एक विश्वासपूर्ण सफलता है, परंतु अभी भी विद्यालयी अपव्यय दर इस समुदाय में उच्च है। नेशनल सर्वे ऑफ़ आउट ऑफ़ स्कूल चिल्ड्रेन (2014) के अनुसार (ग्राफ़ 2) मुस्लिम समुदाय में 4.43 प्रतिशत बालक और बालिकाएँ कक्षा से बाहर हैं जो कि हिंदुओं (2.73 प्रतिशत) एवं अन्य धार्मिक समुदाय (1.26) से कहीं अधिक है। कुछ राज्यों जैसे कि उत्तर प्रदेश में इस समुदाय के विद्यार्थियों में यह दर 5.45 प्रतिशत है (एस. आर. आई., 2014)।

विद्यालयी अपव्यय के संदर्भ में देखा जाए तो सत्र 2009–10 में प्राथमिक स्तर पर 32.6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने विद्यालय त्याग दिया था एवं प्रारंभिक स्तर पर यह दर 33.6 प्रतिशत रही है (एस.आर.आई., 2014)। उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि स्वतंत्रता

ग्राफ़ 2 — मुस्लिम, हिन्दू और अन्य में आउट ऑफ़ स्कूल बच्चों की तुलना (2014) (प्रतिशत)

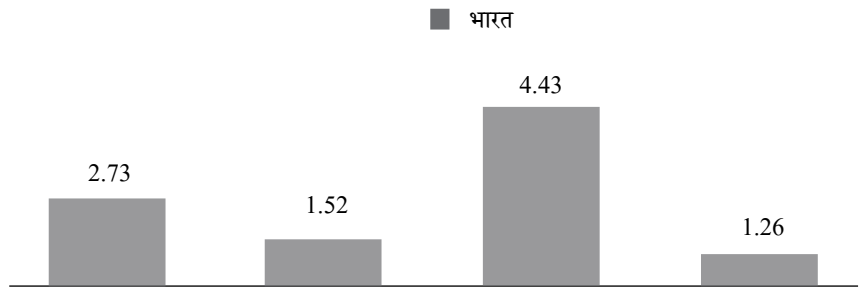

स्रोत — नेशनल सर्वे ऑफ़ एस्टीमेशन ऑफ़ आउट ऑफ़ स्कूल चिल्ड्रेन, एस.आर.आई., 2014

के 65 वर्षों के उपरांत एवं राष्ट्रीय स्तर के साक्षरता एवं शिक्षा अभियानों के बाद भी मुस्लिम समुदाय के लिए विद्यालयी अपव्यय की समस्या एक गंभीर समस्या बनी हुई है।

मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों में विद्यालयी अपव्यय के कारण

विद्यालयी अपव्यय एक बहुआयामी प्रघटना है (सिद्दीकी, 2013; आलम, 2011) एवं शिक्षा को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों को ध्यान में रखते हुए ही इस प्रघटना की जाँच एवं उसकी व्याख्या की जा सकती है। शोधकर्ता ने अपव्यय के भिन्न-भिन्न आयामों को ध्यान में रखते हुए शोध परिणामों एवं विचारों को प्रस्तुत किया है। सर्वेक्षण हेतु चयनित न्यादर्श (शोध अध्ययनों) के माध्यम से विद्यालयी अपव्यय के कई कारणों की पहचान की गई, जो कि निम्न प्रकार हैं —

जागरूकता का अभाव

मुस्लिम विद्यार्थियों के विद्यालयी अपव्यय होने में मुस्लिम समुदाय में आधुनिक शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव एक महत्वपूर्ण कारण है। शिक्षा के प्रति अजागरूकता से तात्पर्य केवल मुस्लिम विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अजागरूकता से नहीं है, बल्कि अभिभावकों की भी शैक्षिक अचैतन्यता से है। अभिभावकों और विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति जागरूक न होना मुस्लिम विद्यार्थियों में विद्यालयी अपव्यय का एक प्रमुख कारक है जो कि शोध अध्ययनों (हुसैन, 2005; बसंत, 2007; फ़ैथ, 2009; आलम, 2011; रॉय, 2011; बसंत, 2012; शेखर, 2012; जमाल, 2012; सिद्दीकी, 2013; अली, 2014; फारूख, 2014; हक, 2016) में भी पाया गया।

अतः प्रमुख परिणाम के रूप में यह कहा जा सकता है कि पहले से व्याप्त अशिक्षा, मुस्लिम

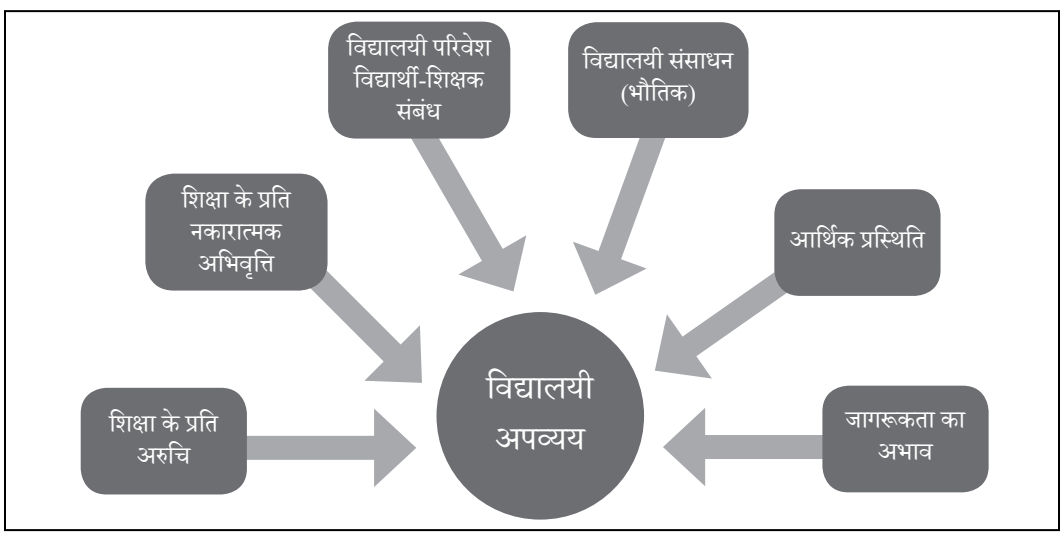

चित्र 1 — मुस्लिम समुदाय में विद्यालयी अपव्यय के कारण

विद्यार्थियों की शिक्षा में एक अवरोध की तरह कार्य करती है एवं औपचारिक शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव इस समस्या को और गहन बनाता है।

आर्थिक परिस्थितियाँ

किसी बालक अथवा बालिका के जीवन में शिक्षा प्रक्रिया के पूर्ण होने की संभावना अन्य कारकों के साथ-साथ उनके अभिभावकों की आर्थिक परिस्थितियों पर भी निर्भर करती है। विभिन्न सरकारी (फ़ैथ, 2009) एवं गैर-सरकारी (फ़ैथ, 2009; जमाल और रहीम, 2012) प्रयासों से अभिभावकों को शिक्षा पर आने वाले व्यय से मुक्त किए जाने के प्रयास सराहनीय हैं। परंतु इन प्रयासों के बाद भी आर्थिक प्रस्थिति के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा अपूर्ण रह जाती है। मुस्लिम समुदाय के संदर्भ में किए गए शोध परिणाम भी यह दर्शाते हैं कि मुस्लिम समुदाय में उच्च विद्यालयी अपव्यय दर के कारणों में आर्थिक कारण प्रमुख है (हुसैन, 2005; फ़ैथ, 2009; आलम, 2011; रॉय, 2011; फारूख, 2012; सिद्दीकी, 2012; जमाल, 2012; अली, 2014; हक, 2016)।

मुस्लिम समुदाय में बड़े परिवारों की बहुलता पाई जाती है (आलम, 2011; बसंत, 2007; सिद्दीकी, 2012; शेखर, 2014), जहाँ जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु घर के हर सदस्य को किसी-न-किसी आर्थिक क्रियाकलाप में संलग्न होना पड़ता है। इस समुदाय में बहुतायत में बच्चे या तो बाह्य आर्थिक क्रियाओं में संलग्न पाए जाते हैं, जैसे — कल-कारखानों में नियमित कामगार के तौर पर (फ़ैथ, 2009) अथवा उन्हें घरेलू कार्यों में संलग्न कर दिया जाता है (हक, 2016)। इन कारणों से इस समुदाय के विद्यार्थी या तो विद्यालय में नामांकन के प्रति उदासीन रहते हैं अथवा नामांकन हो जाने पर वे प्रक्रिया के मध्य में ही विद्यालय का त्याग कर देते हैं एवं उनकी शिक्षा अधूरी रह जाती है।

विद्यालयी परिवेश

विद्यालयी परिवेश से तात्पर्य संपूर्ण विद्यालयी वातावरण से है, जिसका विद्यार्थी के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य एवं विकास पर अति महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है (त्यागी, 2012)। विद्यालयी परिवेश एक बहुआयामी संप्रत्यय है, जो विद्यालय की आधारभूत संरचना, शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, पर्याप्त मानव संसाधन, बेहतर प्रशासन एवं प्रबंधन, खेल-कूद की व्यवस्था इत्यादि इसके प्रमुख अवयव हैं। विद्यालयी परिवेश के विभिन्न अवयवों का संबंध मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों में होने वाले अपव्यय की प्रघटना से परिलक्षित होता है। उदाहरणस्वरूप विद्यालयी संरचना, जैसे कि, कमरे, शौचालय, पेयजल इत्यादि की कमी के कारण बहुत से विद्यार्थी विद्यालय छोड़ देते हैं (सिद्दीकी, 2013; आलम, 2011; आलम, 2012)। इसी प्रकार, विद्यालय में शिक्षक-विद्यार्थी का अनुपात अनुकूल न होने की स्थिति में शिक्षक, विद्यार्थियों पर ध्यान नहीं दे पाते हैं और उनकी समस्याओं को अनदेखा कर देते हैं, जिसके कारण विद्यालय के प्रति विद्यार्थी उदासीन होकर अपव्ययित हो जाते हैं (अली, 2014)। विद्यालयी परिवेश के अंतर्गत शिक्षक-विद्यार्थी संबंध बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों के प्रति कई शिक्षकों में धर्म-आधारित भेदभावपूर्ण व्यवहार पाया

गया। इस प्रकार के भेदभावपूर्ण व्यवहार के कारण मुस्लिम विद्यार्थी औपचारिक विद्यालयों में न तो दूसरे धर्म के विद्यार्थियों के साथ सहयोग प्राप्त कर पाते हैं और न ही अपना समायोजन कर पाते हैं और अंततः विद्यालय त्याग देते हैं (सिंह, 2011)।

प्रतिकूल विद्यालयी परिवेश विद्यालयी अपव्यय की प्रघटना को बढ़ावा देता है एवं मुस्लिम विद्यार्थियों के संदर्भ में यह और अधिक महत्वपूर्ण है (सिंह, 2011; सिद्दीकी, 2013; आलम, 2011)।

मनोवैज्ञानिक कारण

विद्यालयी अपव्यय संबंधित साहित्यिक सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि मुस्लिम विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति अभिरुचि का अभाव है (फ़ैथ, 2009; रॉय, 2011; फारूख, 2012; जमाल, 2012; सिद्दीकी, 2013; अफसर, 2014)। यद्यपि अभिरुचि को अपव्यय के एक कारक के रूप में स्थापित किया गया है, परंतु इसका प्रभाव अप्रत्यक्ष है। कई अन्य कारक हैं, जिनके संयुक्त प्रभाव के कारण विद्यार्थियों में अभिरुचि का अभाव पाया जाता है। शिक्षा व्यवस्था में अरुचि की व्याख्या विभिन्न चरों, जैसे कि, निम्न आर्थिक स्थिति, अभिभावकों में व्याप्त अशिक्षा, विभिन्न व्यवसायों में संलग्नता, अधिगम की समस्या इत्यादि द्वारा किया जा सकता है। अरुचि उत्पन्न होने पर विद्यार्थियों में शैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता के प्रति प्रेरणा की कमी होती है, विद्यालय से जुड़ाव नहीं हो पाता है एवं अंततः उनके विद्यालयी अपव्यय का कारण बनता है।

अरुचि के साथ-साथ शोधकर्ता ने विद्यार्थियों एवं अभिभावकों में औपचारिक शिक्षा के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति के प्रभाव को भी पाया है (सिद्दीकी, 2012)। औपचारिक शिक्षा के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति की व्याख्या पुनः कई अन्य कारकों के माध्यम से की गई है। उदाहरणस्वरूप, मुस्लिम अभिभावकों में छात्राओं की सुरक्षा को लेकर व्याप्त चिंता, औपचारिक शिक्षा एवं रोज़गार के मध्य संबंध को लेकर अनिश्चितता की स्थिति, आर्थिक कार्यों में बालक-बालिकाओं की संलग्नता इत्यादि कुछ ऐसे कारक हैं जिनके कारण विद्यार्थियों में औपचारिक शिक्षा के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति जन्म लेती है (सिद्दीकी, 2012)।

संदर्भ

अग्निहोत्री, र. 2010. *आधुनिक भारतीय शिक्षा— समस्याएँ और समाधान*. हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर.

अली, ए. 2014. ए कम्पेरेटिव स्टोरी ऑन दि ड्रॉपआउट प्रोब्लम इन प्राइमरी एजुकेशन अमंग मुस्लिम कम्युनिटी इन रिलेशन टू जेंडर एंड इकोनोमिक स्टेटस.

http://www.iosrjournals.org/losrjhss/papers/voll19issue121version-pdf.

आलम, आरिफ़ एस.एम. 2011. कौज़ेटिव फ़ैक्टर्स फ़ॉर ड्रॉपआउट अमंग मिडल क्लास फ़ैमिलीज़ — ए स्टडी फ्रोम कोथवा. पब्लिश्ड डॉक्टोरल डीज़र्टेशन. http://www.slideshare.net/.

एन.सी.ई.आर.टी. 2006. *कांसेप्ट एंड डेफ़िनेशंस*.

http://www.ncert.nic.in/programmes/education_survey/msise/Concepts%20and%20Definitions%20-%20Alphabatical.pdf.

गुड, सी. वी. 1973. *डिक्शनरी ऑफ़ एजुकेशन*. मैकग्रा हिल, न्यू यॉर्क.

गोविंदा, आर. 2004. *एजुकेशन फ़ॉर ऑल — ए रिपोर्ट*. न्यूपा. नयी दिल्ली.
http://www.mhrd.gov.in.pdf.

गौड़ा और शेखर 2014. फ़ैक्टर लीडिंग टू स्कूल ड्रॉपआउट इन इंडिया — एन अनालिसिस ऑफ़ नेशनल फ़ैमिली हेल्थ सर्वे— 3 डाटा. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ सांइटिफ़िक रिसर्च*. वाल्यूम 4, अंक 6.

जमाल और रहीम. 2014. एजुकेशनल इंक्लूज़न ऑफ़ मुस्लिम चिल्ड्रेन — एक्सप्लोरिंग द चैलेंजेस एंड इंक्लूज़िव स्ट्रैटेजीस. http://delhi.gov.in.

डिस्ट्रिक्ट इन्फ़ोर्मेशन सिस्टम फ़ॉर एजुकेशनल फ्लैश स्टेटिस्टिक्स. http://www.dise.in.

नूना, ए. 2003. *एजुकेशन ऑफ़ मुस्लिम गर्ल्स — ए स्टडी ऑफ़ द एरिया इंटेंसिव प्रोग्राम*.

फ़ारूख, एम. 2014. *कौज़ेस ऑफ़ प्राइमरी स्कूल स्टूडेंट्स 'ड्रॉपआउट इन पंजाब प्राइमरी स्कूल टीचर्स पर्सपेक्टिव*.
www.pkimagesjournaljee.PDF.Shahid261.

फ़ैथ. 2009. *कंसल्टेंसी सर्विस फ़ॉर स्टडी ऑन ड्रॉपआउट रेट्स ऑफ़ स्कूल चिल्ड्रेन इन पंजाब*.
http://www.pbplanning.gov.in/hdr/dropoutstudyfinalreportFaithPDF.

बसंत, आर. 2007. *सोशल, इकनॉमिक एंड एजुकेशनल कंडीशंस ऑफ़ इंडियन मुस्लिम्स*.
http://www.jstor.org/stable/4419330vol.42,no.10.

———. 2012. *एजुकेशन एंड इम्प्लॉइमेंट अमंग मुस्लिम्स इन इंडिया — एन अनालिसिस ऑफ़ पैटर्न्स एंड ट्रेंड्स*.
http://www.iimahd.ernet.inpdf.

बेगम, ए. 2015. ए स्टडी ऑन द प्रोब्लम्स ऑफ़ ड्रॉपआउट्स अमंग द प्राइमरी स्कूल स्टूडेंट एंड देयर रिमेडियल मिज़र्स. पब्लिश्ड डॉक्टोरल डीज़र्टेशन, गुलबर्ग यूनिवर्सिटी, गुलबर्ग.

बोन्नेयाउ, के. 2015. *वॉट इज़ ए ड्रॉपआउट*?
https://www.purdue.edu/hhs/hdfs/fii/wp-content/uploads/2015/07/s_ncfis04c03.pdf.

भारत सरकार. 2006. *सोशल, इकनॉमिक एंड एजुकेशनल स्टेटस ऑफ़ इंडिया – ए रिपोर्ट*. भारत सरकार. नयी दिल्ली.

रॉय, चन्दन. 2011. ए स्टडी ऑन द ड्रॉपआउट प्रोब्लम ऑफ़ प्राइमरी एजुकेशन इन उत्तर दिनाजपुर, वेस्ट बंगाल.
http://mpra.ub.uni.muenchen.de/40319/.

राइट टू फ्री एंड कंपलसरी एजुकेशन. 2009. http://www.Indiacode.nic.in.

शाज़िल और असमा 2015. *एजुकेशनल विज़न ऑफ़ मुस्लिम्स इन इंडिया — प्रोब्लम्स एंड कंसर्न्स*. www.ijhssi.org.

सच्चर, आर. 2006. *भारत में मुसलमानों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति*.
http://www.minorityaffairs.gov.in.

साहनी, यू. 2015. *प्राइमरी एजुकेशन इन इंडिया — प्रोग्रेस एंड चैलेंजेस*.
https://www.brookings.edu.

सिंह, नीतू. 2011. *ए स्टडी ऑफ़ स्कूल सोशल क्लाइमेट एंड ड्रॉपआउट एलीमेंट्री लेवल*.

सिद्दीकी, एम. 2012. एजुकेशनल बैक्वर्डनेस ऑफ़ मुस्लिम्स इन इंडिया एंड इट्स पॉसिबल रेमेडीज़. http:// www.worldwidejournals.com>fil evolume:2.issue3.

———. एम. एच. 2013. द प्रॉब्लम्स ऑफ़ स्कूल ड्रॉपआउट्स अमंग मायनोरिटीज़ विद स्पेशल रेफरेंस टू मुस्लिम्स इन इंडिया http://www.irjcjournals.org/.

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय. 2015. *भारत वार्षिक संदर्भ ग्रंथ*. प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नयी दिल्ली.

सोशल एंड रूरल रिसर्च इंस्टिट्यूट. 2014. नेशनल सैंपल सर्वे ऑफ़ एस्टिमेशन ऑफ़ आउट-ऑफ़-स्कूल चिल्ड्रेन इन द एज ऑफ़ 6–3 इन इंडिया. http://www.ssa.nic.inpdf.

हुसैन, ज़ेड. 2005. *अनलयसिंग डिमांड फ़ॉर प्राइमरी एजुकेशन — स्लम ड्वेलर्स ऑफ़ कोलकाता*. http://mpra.ub.uni-muenchen.de/21184/.

होक, एम ज़ेड. 2016. मुस्लिम एजुकेशन इन मुर्शिदाबाद डिस्ट्रिक्ट ऑफ़ वेस्ट बंगाल — प्रोब्लंस एंड सोल्यूशंस. http://www.ijhss.com/voll-iiissue-vi.